आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2277 • उदयपुर, शुक्रवार 19 मार्च, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

हवाई पट्टी पर अब जल्द ही ट्रेनी पायलेट भी तैयार होंगे

मंदसौर की हवाई पट्टी पर अब जल्द ही ट्रेनी पायलेट भी तैयार होंगे। शहर के आकाश मे छाटे हवाई जहाज अब दिनभर उड़ते दिखेंगे। नई दिल्ली की ग्लोबल कनेक्ट एविएशन प्रा.लि. को यह हवाई पट्टी लीज पर दी गई है। बायपास पर नौलखा बीड़ में स्थित दो किमी की हवाई पट्टी के आसपास बाउंड्रीवाल बन रही है। इसके अलावा यहा विमानों के लिए हेंगर भी तैयार हो रहे हैं। यहां तक एक छोटा टर्मिनल भी बनेगा। जल्द ही पायलट ट्रेनिंग स्कूल प्रारंभ हो जाएगा। इसके बाद मंदसौर से रीजनल एयर कनेक्टिविटी के तहत छोटे विमान की सेवाएं भी प्रारंभ हो सकती हैं।

मंदसौर में स्थित हवाई हवाई पट्टी को मप्र के विमानन विभाग मंत्रालय द्वारा नई दिल्ली की ग्लोबल कनेक्ट एविएशन प्रा. लि. को लीज पर दी गई है। यह कंपनी लाइंग ट्रेनिंग ऑगेर्नाइजेशन, रीजनल कनेक्टिविटी और एयर एंबुलेंस, स्काई ड्राईविंग, एरियल सर्वे के क्षेत्र में कई वर्षो से कार्यरत है। अब मंदसौर की हवाई पट्टी छात्र–छात्राओं को कमर्शियल पायलट लायसेंस हेतु प्रशिक्षण देगी। इसमें एक ट्रेनी पायलेट के प्रशिक्षण की समयावधि 10–12 माह तक रहेगी। इसमें 200 घंटे की उड़ान कराई जाएगी। प्रशिक्षण के तहत पंजीकरण, वर्दी, एसपीएल (छात्र पायलट लाइसेंस) के दस्तावेज एफआरटी ओएल (उड़ान रोडियो टेलीफोन ऑपरेटर लायसेंस), सीपीएल (कमर्शियल पायलट लाइसेंस), ग्राउण्ड स्कूल प्रशिक्षण दिये जाएंगे। कपंनी के पास स्वयं का एमआरओ (रखरखाव मरम्मत ओवरआल) भी है। इसमें कपंनी द्वारा एमएमई (विमान रखरखाव इंजीनियर) वाले छात्रों को ट्रेनिंग दी जाएगी।

कुछ एयरलाइंस से है अनुबंध– बताया जा रहा है कि कंपनी का शेड्यूल एयरलाइंस इंडिगो, स्पाइस जेट व गो एयर के साथ अनुबंध भी है। इसके तहत अगर छोटे हवाई जहाज चलते हैं तो वह मंदसौर के निकटतम हवाई अड्डे तक यात्रियों को पहुंचाने की सुविधा देकर वहां से मुंबई, बैंगलुरू, कोलकाता, दिल्ली व अन्य शहरों के लिए लिंक लाइट की सुविधा मिल सकती है।

इसरों की 2021 की पहली उड़ान

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने ब्राजीली उपग्रह अमेजोनिया–1 समेत निजी क्षेत्र के 19 उपग्रह रविवार को पृथ्वी की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित कर 2021 की शानदार शुरूआत की।

यह अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत नवगठित न्यू–स्पेस इंडिया लिमिटेड(एन–सिल) का पहला मिशन भी है। स्टार्टअप कंपनी स्पेसकिड्स का उपग्रह सतीश धवन सैट(एसडीसैट) अपने साथ भागवत गीता की इलेक्ट्रिोनिक कॉपी और पीएम मोदी की तस्वीर के साथ इसरोध्यक्ष के. शिवन, इसरो के वैज्ञानिक सचिव उमा महेश्वरन आर. सहित 25 हजार लोगों के नाम भी ले गया है। तीन शैक्षिक संस्थाओं के तीन उपग्रहों (यूनिटीसैट) और अमरीका के 12 स्पेसबीज उपग्रह भी धरती की कक्षा में स्थापित किए गए। ऐसा पहली बार हुआ, जब इसरो ने किसी निजी कंपनी के उपग्रह का प्रक्षेपण किया। ब्राजीली उपग्रह के प्रक्षेपण को प्रधानमंत्री ने नए युग के अंतरिक्ष सुधारों की शुरूआत बताया। पी. एम ने ब्राजील के राष्ट्रपति जायर बोल्सनारो को बधाई देते हुए कहा कि यह हमारे अंतरिक्ष सहयोग में एक ऐतिहासिक क्षण है। इसरो अध्यक्ष के. शिवन ने कहा कि ब्राजील के डिजाइन किए गए उपग्रह को लॉन्च कर भारत और इसरो गर्व का अनुभव कर रहे हैं। उपग्रह अच्छी स्थिति में है। मैं इसरो और ब्राजीली टीम को बधाई देता हूं।

सेवा–जगत्
सेवा पथ पर आपका नारायण सेवा संस्थान

सीधा हुआ सोनू का टेढ़ा पैर

धामपुर (बिजनौर) उत्तरप्रदेश निवासी अब्दुल वाहिद का पुत्र जन्म से ही पोलियोग्रस्त पैदा हुआ। जीवन के 17 वर्षों में उसे पिता ने कई हॉस्पीटल में दिखाया पर कहीं भी पोलियो रोग की दिव्यांगता में राहत नहीं मिली। परेशान परिवार सोनू की तकलीफ देखकर बहुत दुःखी होता था पर जन्मजात बीमारी के आगे वे लाचार थे। एक दिन टेलीविजन पर नारायण सेवा संस्थान की दिव्यांगता ऑपरेशन सेवा के बारे में देखा तो बिना समय गंवाये वो संस्थान में उदयपुर पहुंच गए। डॉ.ओ.पी. माथुर ने जांच करके दांये पांव का ऑपरेशन कर दिया जिससे उन्हें बड़ा फर्क नजर आया। दूसरे पांव के ऑपरेशन के लिए संस्थान में पुनः आए। सफल ऑपरेशन के पश्चात् सोनू पूर्ण–स्वस्थ है। उन्हें भरोसा है कि वह शीघ्र ही पोलियो की दिव्यांगता को मात देकर अपने पैरों पर चलर गांव पहुंचेगा।

राशन पाकर हर्षाया बाबूराव

दिवाली के दो दिवस पूर्व नारायण सेवा संस्थान से राशन सामग्री सहायता पाकर बाबूराव और परिजन बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे– संस्थान के द्वारा दिए गए दीये जलायेंगे और राशन से मीठा बनाकर दीपावली मनायेंगे। वडगांव– गंगाखेड़ (परभणी) निवासी 40 वर्षीय बाबूराव दोनों पांवों से दिव्यांग है।

पत्नी इंदुमती दोनों आंखों से रोशनीहीन है। इने 10 वर्ष की एक बेटी है। भीख मांगकर गुजारा करने वाले इस परिवार पर कोरोना का ऐसा संकट आया कि दैनिकचर्या के साथ दो जून रोटी खाना भी दूभर हो गया। पति–पत्नी और बेटी रोटी–रोटी की मोहताज हो गई। दिव्यांग दम्पती भूख से इतने सताये गए कि पल–पल उन्हें मृत्यु करीब नजर आने लगी।

ऐसे परिवार की जानकारी जैसे ही संस्थान की परभणी शाखा को मिली तो उसने मदद करनी शुरू की। दो माह से निरन्तर राशन पाकर परिवार बहुत प्रसन्न है। सहयोग करने वाले हाथों एवं दानवीरों का दिल से दुआ दे रहा है। दीपोत्सव के दिन शाखा संयोजिका मंजू जी दर्डा ने परिवार को मिठाई भेंटकर हर संभव मदद का भरोसा भी दिलाया। आप द्वारा प्रेषित भोजन सामग्री सहयोग ऐसे गरीब दिव्यांग और मजदूर परिवारों का निवाला बन रहा है जिनकी आखिरी उम्मीद टूटने वाली थी, आपका सहयोग हजारों गरीब परिवारों के लिए खुशियों की सौगात है।

क्या भूलूँ क्या याद करूं

इस अवतरण को जब भी लिखने बैठती हूँ तो बस एक चेहरा सामने आ जाता है, ...कैलाश 'मानव' का..... इतनी घटनाएं जुड़ी हैं या यों कहिए 'मानव' इतने जुनून से जुड़े हैं संस्था के साथ, या यों कहिए संस्था जुड़ी है उनसे जुनून के साथ ....कुछ भी कहिए परन्तु "नारायण सेवा संस्थान" एक जुनून का नाम है, एक नशे का नाम है। वह नशा जो श्री 'मानव' के सिर चढ़ कर बोलता है, "सेवा का नशा" और सच ही है जब इतना दर्द हो दिल में दुखियों के लिए, इतनी पीड़ा हो कि दर्द उसे हो और आँसू श्री मानव के निकलें..... तभी तो हो पाता है, इतने वृहद रूप से सेवा का काम इतने विकलांगों का निःशुल्क ऑपरेशन व अन्य कई–कई सेवा कार्य..... एक अकेला इन्सान स्वयं बहुत कुछ करना चाहता है, परन्तु एक सहयोगी समाज की आवश्यकता होती है उस बहुत कुछ की पूर्ति के लिए..... श्री "मानव" ने हम सभी के दिलों में गहरे सेवा के जज्बात जो दबे हुए थे उन्हें बाहर निकाला है और निश्चित ही उन्हीं कोमल जज्बातों ने इतने बड़े रूप में सेवा कार्य करवाए... .. श्री मानव संस्थान के कार्य की वजह से बहुत व्यस्त रहते हैं। कभी–कभी अपने व नजदीकी लोगों से लम्बी बात करने का वक्त नहीं निकाल पाते परन्तु मैंने देखा कि हर पीड़ित को वे गले लगाकर मिलते हैं उसकी बात सुनते हैं और उस समय हर सम्भव जो मदद हो सकती है, करते हैं। कभी–कभी तो अपना पूरा पर्स ही खाली कर देते हैं, अगर कुछ खा रहे तो सभी को बांट देते हैं, उनके रोम–रोम में बसी है करूणा, दया, प्रेम.....

सोते वक्त रात में जब भी नींद खुल जाएगी बस उसी वक्त उठकर संस्थान के कार्य करना शुरू..... किसी से भी बात किसी अन्य टॉपिक पर करेंगे पर कुछ ही क्षणों बाद आ जाएंगे नारायण सेवा की बातों पर.....

मुझे तो लगता है उनकी हर सांस नारायण सेवा का नाम जरूर लेती है.... . अद्भुत व्यक्तित्व हैं, बहुत अद्भुत..... बहुत कुछ है आपसे कहने को श्री "मानव" के बारे में, उनकी सेवा के बारे में, उनके जुनून के बारे में....

– कल्पना गोयल

मोक्ष

अब समझने की बात यह है कि सृष्टि को तीन तत्व चलाते हैं। ईश्वर जीव और प्रकृति । तीनों ही अनादि व अनन्त यानि इन तीनों सत्ताओं का न कोई आरम्भ है, न कोई अन्त है। इस सृष्टि को ईश्वर ने जीव को उसके अच्छे बुरे कर्मो का फल अच्छे व पुण्य कर्मो का फल सुख के रूप में और बुरे कर्मो का फल दुःख के रूप में देने के लिए प्रकृति के अणु– परमाणुओं से यह सृष्टि रची। इसमें प्रकृति सत् है यानी इसकी सत्ता है पर यह जड़ है दूसरी सत्ता है जीवन जो सत् और चित है। यानी जिसकी सत्ता भी है। और चेतनता यानी गति भी है। तीसरी सत्ता ईश्वर, वह सत् कि और आनन्द का सागर भी है। यानी ईश्वर की सत्ता भी है। वह चेतन भी है यानी गति भी है आनन्द का भण्डार है इसीलिए ईश्वर को सच्चिदानन्द भी कहते हैं। ईश्वर ऊपर है जीव बीच में है और प्रकृति नीचे है। जीव जब बुरे कर्म करता है तो वह नीचे प्रकृति की ओर जाता है। जिसमें भोग है। तब जीव भोग में फंस कर फॅसा रहता है। भोग में क्षणिक सुख है पर दुःख अधिक है।

इसलिए जीव दुःखों में फंसा रहता है। जब जीव अच्छे कर्म करता हुआ ऊपर की तरफ जाता है। तो इसे मनुष्य की प्राप्ति होती है। जिसके पास आनन्द ही आनन्द है। इस प्रकार जीव यानी मनुष्य जब अच्छे कर्म करता है। और अष्टांग योग द्वारा आनन्द की प्राप्ति करता है और मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्त करता है। जिसमें ऊपर लिखी अवधि तक ईश्वर के सानिध्य में रह कर परम् आनन्द की प्राप्ति करता रहता है और मोक्ष की अवधि के बाद पुनः धरती आकर मानव योनी में जन्म लेता है।

जमीन में दफन 2000 साल पुराना अनुष्ठानिक रथ मिला

इटली के पोम्पेई शहर में पुरातत्व विशेषज्ञों ने दो हजार साल पुराना अनुष्ठानिक (सेरेमोनियल) रथ खोजा है। इसमें चार पहिए लगे हैं। नेपल्स की खाड़ी में की गई यह खोज काफी अहम मानी जा रही है। रथ पूरी तरह संरक्षित है। इसके साथ लोहे के उपकरण भी मिले हैं। रथ पर कांसे की सजावट है। इसे प्राचीन पोम्पेई के उत्तर में सिविता गिउलियाना के प्राचीन विला के अस्तबल के पास खोजा गया। इटली के संस्कृति मंत्रालय का कहना है कि यह खोज अद्वितीय अध्याय का प्रतिनिधित्व करती है। इटली के इतिहास में ऐसी खोज पहले नहीं हुई।

पहला लौह रथ ....

इसे पहला 'लौह रथ' बताया जा रहा है। इसे 7 जनवरी को दो मंजिला बरामदे से निकाला गया। पुरातत्त्वविदों का मानना है कि अब तक खोज में सवारी और सामान ढोने वाली गाड़ियां ही मिलती रही है। पहला मौका है, जब हजारों साल पुराना अनुष्ठानिक वाहन मिला है।

लुटेरों की नजर से भी बचा रहा.....

79 ईस्वी में ज्वालामुखी माउंट वेसुवियस के विस्फोट के बाद पोम्पेई में सब तहस–नहस हो गया था। यह रथ उसी समय का माना जा रहा है। यह छत और दिवारें गिरने के बीच दब गया था। यह महत्त्वपूर्ण पूरा सामग्री लुटेरों से बची रही। ऐसे लुटेरे सुरंगे खोदकर प्राचीन सामग्री चुराने में जुटे रहते हैं। कोई इस रथ को नुकसान नहीं पहुंचा पाया।

संस्थान द्वारा किए गए सेवा कार्य

क्र.सं	सेवा कार्य	वर्तमान आकड़े
1	दिव्यांग ऑपरेशन संख्या	4,22,250
2	व्हील चेयर वितरण संख्या	2,72,353
3	ट्राई साईकिल वितरण संख्या	2,62,872
4	बैशाखी वितरण संख्या	2,93,539
5	श्रवण यंत्र वितरण संख्या	5,5004
6	सिलाई मशीन वितरण संख्या	5,220
7	कृत्रिम अंग वितरण संख्या	15,262
8	कैलीपर लाभान्वित संख्या	3,55,597
9	नशामुक्ति संकल्प	3,7749
10	नारायण रोटी पैकेट	9,82,400
11	अन्न वितरण (किलो में)	1,63,728,72
12	भोजन थाली वितरण रोगीयों कि संख्या	3,91,18,000
13	वस्त्र वितरण संख्या	2,70,773,20
14	स्कूल युनिफार्म वितरण संख्या	1,50,500
15	स्वेटर वितरण संख्या	1,35,500
16	कम्बल वितरण संख्या	1,72,000
17	दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह लाभान्वित जोड़ो की संख्या	2109 जोड़े
18	हेंडपंप संख्या	49
19	आवासीय विद्यालय	455
20	नारायण चिल्ड्रन एकेडमी	821
21	भगवान निराश्रिमत बालगृह	3160
22	**व्यवसायिक प्रशिक्षण शिविर–** 1 सिलाई प्रशिक्षण लाभान्वित 2 मोबाइल प्रशिक्षण लाभान्वित 3 कम्प्युटर प्रशिक्षण लाभान्वित	 952 871 805

अरूण का उदय संस्थान द्वारा

अरुण (3 वर्ष), पिता– श्री हनुमान, शहर–मालपुरा, टोंक राजस्थान। जन्म से ही अरूण के दोनों पांव टेढ़े–मेढ़े थे। इलाज के लिए जयपुर आदि कई बड़े शहरों में दिखाया, लेकिन कहीं कोई उपचार सम्भव न हो सका।

उनके बड़े भाई ने– जो पुलिस में थे, और कई बार संस्थान में आ चुके हैं– यहां के बारे में बताया। इस तरह वे संस्थान पहुंचे। पांव की जांच के बाद 3 दिसम्बर को एक पैर का ऑपरेशन हुआ जिससे राहत मिली। दूसरे पैर का भी शीघ्र ऑपरेशन होगा।

श्री हनुमान कहते है कि–"मेरे बेटे का एक पैर बिल्कुल सीधा हो गया, यह बहुत खुशी की बात है। यहां आकर बहुत ही अच्छा लगा। ऐसी सुख–सुविधाएं कहीं भी देखने को नहीं मिलती हैं।"

पूजा की जिंदादिली और जज्बे को सलाम

पूजा, और इसकी माँ दुनिया में अकेले है। सगे– संबंधियो के नाम पर एक दादी है जो कि सुन और बोल नहीं सकती। पूजा की मां कहती है मैं पढ़ी– लिखी नहीं , पियोन का काम करती हूँ लेकिन मैं चाहती हूँ बेटी पढ़े और आगे बढ़े। लेकिन पूजा की माँ इतना नहीं कमा पाती की पढ़ाई का खर्च उठा सके। बढ़ती उम्र और शादी की चिंता ने उन्हें बीमार कर दिया।

पूजा कहती है हमारी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि, मम्मी हमे अच्छे से अच्छे स्कूल में पढ़ा सके। लेकिन फिर भी मम्मी ने हमारे लिये बहुत कुछ किया। लोग सोचते है कि बेटा ही सबकुछ कर सकता है, बेटिया क्यों नहीं कर सकती? बेटिया भी आगे बढ़ सकती है। पूजा ने इसी जज्बे और जूनून के साथ नारायण सेवा संस्थान से निःशुल्क 45 दिन का कम्प्युटर कोर्स प्रारम्भ किया।

वो बताती है कि मैंने नारायण सेवा संस्थान से कम्प्युटर कोर्स किया। जिसमें बेसिक हिन्दी, इग्लिश टाईपिंग की। उसके बाद मैंने एडवांस कोर्स भी किया जिससे मैं आज अच्छी जॉब कर रही हूँ और पांच हजार रुपये महीना का कमा लेती हूँ। बेटी हूँ तो मैं अपनी माँ के लिए सबकुछ करूंगी जो बेटा करता है। मैं मेरी मम्मी से वादा करती हूँ कि मैं उन्हें अच्छी से अच्छी कम्प्युटर इंजीनियर बनकर दिखाउंगी। मैं नारायण सेवा का दिल से धन्यवाद करना चाहती हूँ।

सम्पादकीय

सेवा, सेवित और सेवक तीनों की एकरसता ही सामंजस्य कहलाती है। सेवा करने वाला सेवक है तो सेवा वह ढूँढ़ ही लेता है। सेवक जब सेवित की सेवा करता है तो सेवित को तो मात्र तात्कालिक लाभ ही होता है और वह समुपस्थित संकट से मुक्त हो जाता है, पर सेवक का तो हर प्रकार से कल्याण ही हो जाता है। सेवक का सेवाभाव कसौटी पर कसा जाकर सफलता के सोपान चढ़ने लगता है। सेवित से भी अधिक आनंदानुभूति सेवक को होती है।

वह अहोभाव से भर जाता है क्योंकि सेवित ने उसे सेवा का अवसर प्रदान किया है। यही भाव सेवक को और भी ऊँचे सेवा विचारों से भर देता है। सेवक के उत्थान में सेवित व सेवा दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः सेवा में सामंजस्य द्वारा ही एक ऐसा वातावरण बनता है जो प्राणिमात्र की सेवा का आधार, मानव जीवन की सार्थकता और धर्म की धारणा को पुष्ट करता है।

कुछ काव्यमय

सेवा के संगीत को,
जो भी लेता साध।
मानवता होती मुखर,
उपजे प्रेम अगाध।।
सेवा मन की साधना,
है बंषी का नाद।
सेवक को रहता सदा,
अपना वादा याद।।
जो भी सेवा कर रहा,
अपने मन को खोल।
अपने मन की भावना,
अपने मन के बोल।।
सेवा रूपी मृदंग का,
होत रहत अभ्यास।
तभी सुनाई देत है,
वाणी मन की खास।
जो सेवा करताल से,
उपजे ऐसा गीत।
राम भजन होता रहे,
बढ़े दीन पर प्रीत।।

- वख्तीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

पीड़ित की सेवा का सुख

एक बार पण्डित मदनमोहन मालवीय किसी आवश्यक कार्य से बग्घी में बैठ कर कहीं जा रहे थे, तो उन्होंने सड़क के किनारे किसी महिला के कराहने की आवाज सुनी। उन्होंने बग्घी रुकवाई और उतरकर देखा कि उस महिला के शरीर से खून बह रहा है और असह्य वेदना से वह कराह रही है। एक नन्हा–सा बच्चा भी उसकी गोद में है। बहुत–से लोग उधर से गुजरे, पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

मालवीयजी ने उसे उठाकर बग्घी में बैठाया और अस्पताल पहुँचे। वे तब तक अस्पताल में रहे, जब तक कि उस महिला के समुचित उपचार की सारी व्यवस्था नहीं हो गई। उन्होंने जाने से पहले उपचार हेतु महिला को कुछ रुपये भी दिये और डाक्टरों से उसकी समुचित देखभाल करने की प्रार्थना की। मालवीयजी पीड़ित की सेवा के सुख को भली–भाँति जानते थे।

अपनों से अपनी बात

सेवा से पीड़ा मुक्ति

हरिद्वार से आगे ऋषिकेश और गंगाजी के उस पार स्वर्गाश्रम– वट वृक्ष के नीचे श्रद्धेय स्वामी जी श्री रामसुख दास जी महाराज के श्री मुख से प्रवचनामृत का रसपान कर रहे थे –हजारों भक्त। "देखो, सबसे सार की बात बता रहा हूँ– सच्चा सार –ध्यान से सुनना –सेवा और सेवा –प्राणि मात्र की सेवा....."

एक हाथ खड़ा हुआ– श्री महाराज जी तो शंका पूछने के लिये बार–बार कहते ही रहते है –

तुरन्त बोले "हाँ हाँ पूछो ...

"महाराज, मैं तो बीमार रहने लग गई, शरीर काम का रहा नहीं, आप सेवा की कह रहे हैं, परन्तु करें कैसे? मन में तो बहुत आता है लेकिन....." कहते–कहते बुढ़िया माई के चेहरे पर झलक आये गहरे विवशता व मजबूरी के भाव।

श्री महाराज जी मधुर वाणी में बोले "देखो, आपका शरीर ही बीमार हुआ है–मन नहीं। प्रति क्षण मन से सेवा की भावना फैलाओ चारों तरफ। प्रभु से प्रार्थना करो– हे दीन–बन्धु, वह मगना बहुत बीमार है– बड़ा कष्ट है उसे, प्रभु उसे ठीक कर दो..... हे कृपालु– हे दीना नाथ....। इसी प्रकार जहां भी सेवा हो रही है उसकी अनुमोदना करो–उत्साह बढ़ाओ और फैलाती रहो सेवा के अणुओं को चारों तरफ सभी दिशाओं में।"

स्थूल से 'सूक्ष्म' ज्यादा प्रभावशाली है और सूक्ष्म से अधिक चमत्कारिक 'कारण'। जिसने "जगत" को जाना है–वही जान पाएगा "जगदीश" को। सूर्य की किरणें अलग से अपना अस्तित्व नहीं रखती, वे प्रकाशित है सूर्य की ही उष्मा से परन्तु किरणों से हम समझ पाते हैं भास्कर को–सविता देवता को।

आइये, जगदीश को जानने के लिये जगत् के हर जीव में झाँकने की कोशिश करें ओर बार–बार कहें मन से–अरे मन? जब खम्भे से नृसिंह भगवान प्रकट हो सकते हैं तो यह जो दुःखी है, यह जो बीमार है उसमें भी तो वही जगदीश है.....

– कैलाश 'मानव'

सच्चा न्याय

एक भिखारी को बीच बाजार में एक बटुआ मिला। उसने बटुआ खोलकर देखा, उसमें सोने की सौ अशर्फियाँ थीं। तभी भिखारी ने एक सौदागर को चिल्लाते हुए सुना– मेरा बटुआ खो गया है। जो कोई उसे खोजकर मुझे लौटाएगा, मैं उसे अच्छा ईनाम दूँगा। भिखारी बहुत ही ईमानदार था। उसने बटुआ सौदागर को लौटाते हुए कहा– यह रहा आपका बटुआ। अब क्या आप मुझे ईनाम देंगे?

सौदागर ने बटुआ लेकर अपनी अशर्फियाँ गिनीं और रौबपूर्वक बोला– अरे! इसमें से सौ अशर्फियाँ चुरा लीं और अब ईनाम माँग रहे हो। दफा हो जाओ यहाँ से, वरना मैं सिपाहियों को बुला लूँगा।

इतनी अधिक ईमानदारी दर्शाने के बाद भी व्यर्थ का दोषारोपण भिखारी से सहन नहीं हुआ और वह बोला– मैंने इसमें से कोई अशर्फियाँ नहीं चुराई हैं और मैं अदालत में जाने के लिए तैयार हूँ।

दोनों इस विवाद को लेकर न्यायालय पहुँच गए। न्यायालय में न्यायाधीश महोदय ने दोनों की बातों को इत्मीनान से सुना और कहा– मुझे तुम दोनों की ही बातों पर पूरा विश्वास है। मैं तुम दोनों के साथ पूरा इंसाफ करूँगा।

न्यायाधीश ने सौदागर की तरफ देखते हुए कहा– तुम कहते हो कि तुम्हारे बटुए में दो सौ अशर्फियाँ थीं, परंतु भिखारी को मिले बटुए में केवल सौ अशर्फियाँ ही हैं, इसका मतलब यह हुआ कि यह बटुआ तुम्हारा नहीं है। चूँकि भिखारी को मिले बटुए का कोई दावेदार नहीं है, इसलिए इस बटुए की आधी अशर्फियाँ सरकारी खजाने में जमा कराने और बची हुई आधी अशर्फियाँ भिखारी को ईनाम के रूप में देने का आदेश देता हूँ।

बेईमान सौदागर हाथ मलता रह गया। अब यह चाहकर भी अपने धन को अपना नहीं कह सकता था। अगर वह ऐसा करता तो उसे सजा हो जाती। इंसाफ पसन्द न्यायाधीश की वजह से ईमानदार भिखारी को उसकी ईमानदारी का उचित ईनाम मिल गया।

अतः जीवन की राहों पर ईमानदारी एवं इंसाफ के साथ डटे रहें, लोभ–लालच न करें। आपको ईनाम जरूर मिलेगा, चाहे दुनिया के द्वारा न सही, परंतु ईश्वर आपको ईनाम जरूर देगा। इसके विपरीत अगर आपके मन में लोभ–लालच आ गया तो जो आपके पास है, वह भी चला जाएगा।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

न्यूयार्क कुछ दिन रहा। कई लोगों से मिला, अपने कार्य के बारे में चर्चा भी की मगर कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि अर्जित नहीं की। लोग प्रशंसा करते, हिम्मत बढ़ाते मगर सहायता देने के नाम पर कुछ नहीं बोलते। दो चार लोगों से ही चेक मिले मगर कुल मिलाकर निराशा ही हाथ लगी। कैलाश क्षुब्ध हो अपने ही आराध्य से नाराज हो गया। ऐसी ही कुपित अवस्था में बैठा वह रेस्टोरेन्ट में भोजन कर रहा था कि उसके टेबल पर एक भारतीय व्यक्ति आये, उससे पूछा– आपके पास बैठ सकता हूं क्या? कैलाश ने अपने चेहरे पर मुसकान लाते हुए कहा– जरूर, जरूर! वह सज्जन उसके पास बैठ गये और पूछने लगे– आप क्या करते हैं। कैलाश ने अपने बारे में बताया, अपने कार्यो की एलबमें भी बताई। उस व्यक्ति का नाम रमेश महाजन था। एलबम देखकर वे बहुत खुश हुए और पूछ बैठे– कैलीफोर्निया का नाम सुना है? कैलाश कुछ जवाब दे उसके पहले ही वे बोल पड़े– केलीफोर्निया के सामने न्यूयार्क तो बच्चा है, हमारे केलीफोर्निया आ सकते हो क्या? कैलाश बोला– आपके अलावा केलीफोर्निया में मुझे कोई नहीं जानता। महाजन बोले– आ जाओ केलीफोर्निया। मैं हूँ वहां। उसकी बातों से कैलाश को एक नई दिशा खुलने की आशा जगी। कुछ देर पहले तक वह अपने जिस आराध्य से नाराज हो रहा था अब उससे ही क्षमायाचना कर उन्हें धन्यवाद देने लगा। केलीफोर्निया, अमेरिका के एकदम दूसरे छोर पर था, न्यूयार्क से बहुत दूर, मगर जाना तो था ही।

अंश-209

स्वास्थ्य कवच मूली

- सोडियम की प्रचुरता के कारण मूली पथरी को गलाने में बहुत लाभकारी है। यह मूत्रावरोध को भी दूर करती है।
- मूली क्षारीय है, इसलिए रक्त की अम्लता को कम करती है।
- गंधक की उपस्थिति के कारण मूली चर्म रोगों की अचूक दवा है। त्वचा को कोमल व चमकदार रखने के लिए मूली का रस मलें और आधे घंटे बाद धो लें। खुजली होने पर खुजली के स्थान पर मूली का रस का प्रयोग किया जा सकता है।
- मूली की तेज गंध पेट के कीड़ों को नष्ट करके शक्तिशाली एंटीबायोटिक का कार्य करती है।
- मूली में उपस्थित क्लोरिन पेट मे सफाई करके, कब्ज समाप्त कर, मल को बाहर निकालती है।
- कब्ज की स्थिति में एक कप मूली रस मे आधा नींबू का रस मिलाकर प्रातः खाली पेट पीएं।
- भूख नहीं लगने की स्थिति में एक मूली के रस में एक–एक चम्मच अदरक और नींबू का रस मिलाकर पिएं अथवा पुदीने की चटनी के साथ खाएँ तथा पत्तों सहित खाएँ।
- मूली में पोटेशियम बहुत होता है। इससे रक्तचाप नियंत्रण में रहता है, हृदय की गति ठीक रहती है। हृदय की पम्पिंग प्रणाली और मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं। उच्च रक्तचाप के मरीज को मूली का रस बार–बार पीना चाहिए एवं निम्न रक्तचाप के रोगी को मूली का रस में सेंधा नमक मिलाकर पीना चाहिए।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अनुभव अमृतम्

मैंने कहा भाईसाहब छुट्टी मिल गयी। पोस्ट ऑफिस से 6 दिन की छुट्टी मिली। ब्रह्माण्ड कहें अनन्त की शक्तियाँ कहें, ज्ञात–अज्ञात उपहार कहें, पहली बार जीवन में किसी फॉर व्हीलर प्राईवेट गाड़ी कार में बैठे मारुति गाड़ी थी। हम तो महाराज बस के अलावा किसी कार मे बैठे नहीं थे। टेक्सी करने का कभी सोचा नहीं। खुद की कार है नहीं। पहली बार राजमल जी भाई साहब के साथ बैठे बीच में और मधुर बातें होने लग गयी। 1:00 बजे जब नाकोड़ा भैरव जी पहुँचे। वहीं विश्राम करना था, पहले से तय था कमरा था। तब तक खूब बातें ही बातें होती रही। कुरेद–कुरेद के मैं पूछता रहा। मैंने एलबम में ये देखा आपके मन में कैसे आया भाईसाहब कि आँखों का केम्प करवाना है? कैलाश जी मैं बोम्बे में छोटा सा कार्य करता था भैरव ट्रॉन्सपोर्ट का दादी सेठ अगियारी लेन कालवा देवी के पास दूसरी मंजिल पर एक छोटी –मोटी पेढ़ी। भैरव ट्रॉन्सपोर्ट छोटा सा काम भिवण्ड़ी में थाणे जिले के और मेरा गाँव बिसलपुर यहीं जन्म हुआ– कैलाश जी।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 89 (कैलाश 'मानव')

मैं बादशाह

एक स्वामी थे। वह हमेशा खुद को बादशाह कहते। एक बार एक विदेशी घूमते–घूमते स्वामी जी के पास पहुंचा। उसने वहां पहुंचकर देखा कि उनके पास कुछ भी तो न था। अपनी खुद की चीजों के नाम पर बस दो कपड़े थे। एक फक्कड़ स्वामी को खुद को बादशाह करते सुन उसने अचरज में पूछा, 'स्वामी जी आप आखिर किस तरह के बादशाह हैं? कौनसी दौलत है आपके पास ? कौनसा राज्य है आपका? जहां तक पता चला है; आपके पास कुछ भी तो नहीं है इन दो कपड़ो के सिवाय।' हंसते हुए स्वामी राम ने जवाब दिया, 'अभी थोड़ी सी कमी रह गई है मेरे राज्य में। ये जो दो कपड़े हैं, अगर ये भी छूट जाएं, तो मेरा राज्य पूरा हो जाए। इनकी वजह से थोड़ी कमी है। ये दो कपड़े ही मेरी सीमा बन गए हैं।' वह शख्स हैरान हो सा उनका जवाब सुनता रहा। कुछ देर रूकने के बाद स्वामी जी ने कहा, 'मैं सचमुच बादशाह हूं। लेकिन मैं बादशाह इसलिए नहीं हूं कि मेरे पास कुछ है। मैं तो इसलिए बादशाह हूं, क्योंकि मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है।'

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023